यंत्रोद्योगों और हाथ-अुद्योगोंके बीच होड़

रजि० नं० बी ४४४८
लाअिसेन्स नं० १५

हरिजनसेवक

दो आना

(संस्थापक : महात्मा गांधी)

भाग १९ सम्पादक : मगनभाई प्रभुदास देसाई अंक ४३

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाअी देसाअी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद–१४

अहमदाबाद, शनिवार, ता० २४ दिसम्बर, १९५५

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

राज्य-संविधान और अीश्वर

दक्षिण भारतसे अेक भाअीने अमेरिकाके 'मनस' पत्रको लिखकर यह विनती की थी कि भारतके संविधानमें 'अीश्वर' का अधिकृत स्थान मान्य किये जानेकी अुनकी मांगका समर्थन किया जाय। 'मनस' के संपादक अिस पत्रकी लंबी चर्चा करके अन्तमें कहते हैं कि हम अिसका समर्थन नहीं कर सकते; भारतके संविधानमें अैसी बात दाखिल करना गलत होगा। जिस 'अीश्वर' को अैसी अधिकृत मान्यताकी आवश्यकता हो वह अीश्वर ही कैसा? — अैसा ताना भी अुन्होंने मारा है।

संपादकने सच बात कही है। संविधानके बजाय प्रत्येक भारतवासी अपने मनमें अीश्वरको अधिकृत स्थान दे तो सच्चा लाभ होगा। और यही बात सच भी है। भगवान **अन्तर-यामी** हैं, **संविधान-यामी** नहीं। और संविधानको जो भगवान चाहिये वे हैं सत्यपरायण, शान्तिपरायण और न्यायपरायण लोकसेवक। अैसे सेवक पैदा करनेके लिअे धर्मभीरुता और निष्ठापूर्ण नीति-परायणताकी जरूरत है। अिसके लिअे अीश्वरके अस्तित्वकी मान्यता अनिवार्य नहीं मानी जा सकती। हां, किसी साकार रूप, अवतार या दैवी शक्तिकी कल्पनाको अीश्वर कहें तो दूसरी बात है। परंतु वह अीश्वर नहीं है। अीश्वर तो 'अव्यक्त' है — 'अव्यक्तोऽहम्'। परंतु आज हमारी दीन दशा 'व्यक्तिमापन्नम् मन्यन्ते मामबुद्धयः' (गीता ७, २४) जैसी है। अज्ञान लोग अैसा मानते हैं मानो अीश्वर व्यक्त हो — अमुक रूप या व्यक्तित्व रखता हो। संविधानमें अीश्वरको रखनेसे अैसी अबुद्धि ही सिद्ध होगी।

तब क्या अमेरिका या दूसरे देशोंके संविधानमें आया हुआ 'अीश्वर' शब्द गलत है? क्या अुसी तरह भारतके संविधानमें भी वह शब्द नहीं रखा जा सकता? शायद अैसी ही अिच्छासे दक्षिण भारतके पत्रलेखकने यह बात लिखी हो। अैसा भाव अुनके मनमें पैदा होना अस्वाभाविक नहीं है। परंतु भारतकी अेक दूसरी कठिनाअी है।

अेक प्रकारसे देखा जाय तो दूसरे देशोंके धर्म पुरुषविशेष और ग्रन्थपूजक हैं। जैसे, अीसाअी, अिस्लाम या बौद्ध धर्म। जिस देशमें सब अेक ही धर्मके लोग हों वहां अुनके धर्मकी बातें या दृष्टि संविधानमें रखी जा सकती है। परंतु भारतकी स्थिति अिससे भिन्न है।

भारत अनेक धर्मों, अनेक भाषाओं तथा अनेक जातियोंवाले अेक छोटेसे विश्व-कुटुम्ब जैसा है। अिसमें किसी अेक धर्मकी मान्यताको राज्यारूढ़ नहीं किया जा सकता। यदि अैसा कहा जाय कि बहुमतका धर्म हिन्दू धर्म है अिसलिअे अुसे माना जाय, तो यह बात भी गलत होगी। धर्म जैसी आध्यात्मिक और व्यक्तिगत वस्तुके साथ अिस विचारका मेल नहीं बैठता। दूसरी बात यह है कि हिन्दू धर्म ग्रन्थपूजक या पुरुषविशेष नहीं है। वह तो अनुभूतिमूलक धर्म है। अुसमें चार्वाकवाद जैसे निरीश्वरवादका भी स्थान है। और बौद्ध तथा जैनधर्म तो निरीश्वरवादी ही हैं। मैं अुन्हें विशाल हिन्दू धर्मके वटवृक्षकी ही शाखायें मानता हूं। सिक्ख धर्मको भी मैं अैसा ही समझता हूं, हालांकि वह अीश्वरवादी है।

अिसलिअे भारतके **संविधानमें** अीश्वर शब्द रखनेसे बहुत लाभ नहीं होगा। बल्कि वैसा करनेमें कुछ अनीश्वरता होनेकी संभावना है! क्योंकि धार्मिक मान्यताके विषयमें किसी प्रकारकी राजनीतिक सत्ता या जबरदस्ती या अुसकी गंध भी आवे तो वह अधार्मिकता अथवा अनीश्वरता अुत्पन्न करेगी।

'मनस' के संपादक अुपरोक्त पत्रकी चर्चा करते हुअे अेक दूसरा मुद्दा यह खड़ा करते हैं कि यदि प्रजामें धर्मका तत्त्व अथवा परम सत्यकी शोधकी भावना सिद्ध करनेकी अुत्कंठा या प्रेरणा न रहे तो वह अच्छी बात नहीं है।

प्रजा सदा सत्याभिमुख और परमार्थलक्षी रहे यह जरूरी है। अच्छी प्रजाभावनाके लिअे यह अेक सामाजिक गुण है। अिसी अर्थमें हम भारतकी प्रजाके विषयमें कहते हैं कि धर्म अुसका प्राण है, आदि आदि। पत्रलेखक यदि अिस भावनाकी रक्षाकी चिन्ता करते हों तो अुसमें तथ्य है अैसा माना जायगा। अैसी ही किसी चिन्तामें से यह बात जन्म लेती है कि बालकोंकी शिक्षामें नीतिधर्मका विषय रहना चाहिये। हम जानते हैं कि भारतके संविधानमें अिस संबंधमें कुछ धारायें हैं। कहा जा सकता है कि अुनके पीछे भारतकी प्रजाकी अिस सांस्कृतिक विशेषताका विचार ही मूल कारण था।

यह प्रश्न अेक नया महत्त्वपूर्ण विचार पैदा करता है। परंतु संविधानमें 'अीश्वर' शब्द रखनेसे यह प्रश्न हल नहीं होगा। नीतिधर्मके अुद्भवके लिअे अीश्वरके अस्तित्वकी मान्यता आवश्यक या अनिवार्य है, अैसा अेक विचार है जरूर। परंतु बुद्ध, सॉक्रेटीज, महावीर जैसे अनेक महापुरुषोंका जीवन अिस विचारको आत्यंतिक सत्यके रूपमें माननेसे अिनकार करता है। यह सच है कि अैसे पुरुषोंको अेक विशेष परम जीवन या व्यापक तत्त्वकी प्राप्तिकी लगन होती है, जिसे अुनका अीश्वर कहा जा सकता है। परंतु रूढ़ अर्थमें अुसे 'अीश्वर' नहीं माना जा सकता। प्रत्येक मनुष्यमें रहे शैतान या मारको जीतनेके लिअे परम दर्शनकी आवश्यकता है; गीताकारके शब्दोंमें 'परं दृष्ट्वा निवर्तते' (गीता २, ५९) — किसी प्रकारके अुच्च दर्शन और अुसे प्राप्त करनेके प्रयत्नके बल पर ही मार, शैतान, षड्रिपु या वासनायें (जो भी कहें सब अेक ही है) जीती जाती हैं। अीश्वरभक्त अीश्वरको परम मान कर अपना सर्वस्व अुसे अर्पण करके ही मार-विजय करते हैं।

www.vinoba.in

मतलब यह कि अिस दूसरे विचारके कारण भी संविधानमें 'अीश्वर' शब्द रखना जरूरी नहीं है। भारतमें लोग 'अुसे सिर पर रखकर' आचरण करनेकी आदत अदालतोंसे डालते हैं; अुसके बदले यदि अीश्वरको हृदयमें रखें तो ज्यादा अच्छा हो। भगवानका स्थान हमारा हृदय-मंदिर है और वह हमारे जीवनमें प्रकट होता है। सच्चे हिन्दू धर्मके सिद्धान्तके अनुसार यही ठीक है। अीसाअी, अिस्लाम वगैरा धर्मोंको माननेवाले देशोंकी तरह भारत अीश्वरको संविधानरूढ़ बनानेका विचार नहीं कर सकता, क्योंकि अुसने अपनी धर्म-संस्कृति और साधना आदिका विकास प्राचीन कालसे विकसित होते आ रहे अपने लोकजीवनके अनुरूप किया है। अीश्वरकी आराधना राज्य, प्रजा और भारतके सब धर्मोंके नागरिक अपने-अपने स्थानसे करें, तो ही अव्यक्त अीश्वर भारतके राज्यमें अपने सच्चे सिंहासन पर विराजमान होगा।

१३–११–'५५ मगनभाई देसाई

(गुजरातीसे)

बोधगयाका समन्वय आश्रम

[ता० १३–९–'५५ को श्री विनोबाने अुकंबा पड़ाव (कोरापुट, अुत्कल) पर आश्रमके बारेमें जो विचार प्रकट किये वे नीचे दिये जाते हैं।]

बिहार छोड़नेके पहले हमें लगा कि वहां पर सेवाका कोअी अितजाम होना चाहिये जिससे भूदानके काममें मदद हो। और दूसरा अैसा भी अितजाम हो, जिससे अुस कार्यके मूल तत्त्वोंका दर्शन हो। प्रथम आवश्यकताकी पूर्ति सर्व-सेवा-संघने गयामें अपना स्थान बनाया अुससे हुअी है। मूल विचारोंके दर्शनके लिअे हमारे मनमें समन्वय आश्रमकी कल्पना आअी। वैसे बहुत दिनोंसे यह विचार चल ही रहा था, लेकिन बिहारके कामसे अुसको चालना मिली और वहांके वातावरणमें कुछ तत्त्व भी अैसे देखे जिसके कारण अुसकी पुष्टि हुअी।

हिन्दुस्तानका कुल जीवन-विकास ही समन्वयकी पद्धतिसे हुआ है। अिस देशकी मुख्य शक्ति वही है। यहां पर जो लोग आये, चाहे आश्रयके लिअे आये हों या आक्रमणके लिअे, अुन सबकी अच्छाअीका समन्वय करनेकी कोशिश हिन्दुस्तानने की है। अुसके परिणामस्वरूप भारतकी संस्कृति अुत्तरोत्तर विकसित होती गअी और भारतकी संस्कृतिका जो दर्शन वेदोंमें होता है, अुसका विकसित दर्शन आधुनिक कालमें होता है। वेदोंमें जो बीज रूपमें था, अुसका फल है आजका भारत धर्म। वैदिक धर्मकी तुलनामें वह बहुत ही परिपुष्ट है, अुपनिषदोंकी तुलनामें भी परिपुष्ट है। धर्मका अुत्तरोत्तर विकास होता गया है। पुराने ग्रंथ हमें आज भी धीरज देते हैं, क्योंकि अुनमें मूल तत्त्व पड़े हुअे हैं। परंतु आजका भारतीय विचार पुराने विचारकी तुलनामें अधिक विकसित है। अिस देशका आजका स्थितप्रज्ञ पुराने जमानेके स्थितप्रज्ञसे आगे बढ़ा हुआ है। यह सब समन्वयके कारण हुआ है। हरअेककी अच्छी चीजें हमने ग्रहण कीं और बुराअियोंको हम छोड़ते गये। यह प्रक्रिया आज भी जारी रहनी चाहिये।

यहां पर मुसलमान, अीसाअी, पारसी, यहूदी, बौद्ध, जैन सबकी संस्कृतियोंके कारण यहांकी संस्कृति पूर्ण हुअी और भारतमें अुसका अेक रूप बना। भारतका अिस्लामका रूप दुनियाके अिस्लामसे कुछ भिन्न है। भारतका अीसाअी धर्म भी दुनियाके अीसाअी धर्मसे कअी अंशोंमें भिन्न है। मैंने पिछले साल पच्चीस दिसम्बरके व्याख्यानमें कहा था कि यहांके अीसाअी धर्ममें कुछ विशेषता दाखिल हुअी है और हो रही है। ब्रह्मविद्याका आधार और जीवमात्रके लिअे अहिंसाका विचार ये दोनों बातें अुसमें दाखिल हुअी हैं। अिस तरह समन्वयकी प्रक्रिया हिन्दुस्तानमें जारी रही है। हम सोच रहे थे कि अिस प्रक्रियाके अध्ययनके प्रत्यक्ष दर्शनके लिअे कोअी स्थान हो और वहां पर साधक रहें, जो पुरानी साधनाकी कमियां दूर करें। बोधगया अेक अैसा स्थान है, जहां पर दुनिया भरके लोग आते हैं, अिसलिअे हम दूसरोंकी भलाअी ग्रहण कर सकते हैं और हमारी भलाअी अुनके पास पहुंचा सकते हैं। अभी सुरेन्द्रजीने वहांसे लिखा है कि वहां पर बाहरसे जो साधु आते हैं अुनको वे अुच्च स्थान पर बिठाकर अुनकी बातें सुनते हैं और कुछ अच्छी चर्चा होती है। यह सुनकर हमें अच्छा लगा। हम चाहते हैं कि अुस स्थानमें सर्वोदयके जीवनका दर्शन हो। अुसका रूप चाहे छोटा ही हो, परंतु अधिकसे अधिक शुद्ध रूप प्रकट करनेकी हम कोशिश करें।

पहला सुधार ध्यानमार्गमें हम करना चाहते हैं। हिन्दुस्तानका ध्यानमार्ग बहुत ही विकसित हुआ है। अुसकी बराबरी शायद सूफी लोग कर सकते हों। लेकिन और कोअी नहीं कर सकते हैं। जहां तक हमारा ज्ञान है अुसके आधार पर हम यह कह रहे हैं। यहांके ध्यानमार्गमें ध्यानका कर्मके साथ विरोध माना गया। ध्यानयोगी अक्सर कर्मयोग नहीं कर सकते थे, क्योंकि अुससे ध्यानमें बाधा आती है, अैसा सोचा गया। दूसरे कर्मयोगियोंकी मदद अुन्हें मिलती थी और दोनों अेक-दूसरेके पूरक थे। कर्मयोगी मानते थे कि हम तो ध्यान नहीं कर सकते हैं, लेकिन ये लोग करते हैं तो अुनका पोषण और रक्षण करना हमारा काम है। ध्यानयोगी समझते थे कि हम अैसी सेवा करते हैं जो दूसरे नहीं कर सकते हैं। कर्मयोग ध्यानमें बाधा देता है यह जो विचार चला आ रहा है अुसमें कुछ कमी है। और अुसमें सुधार होना चाहिये अैसा हमें लगा। कर्म छोड़ते हुअे जिस तरह समाधिकी लब्धि हो जाती है, वैसे कर्म करते-करते भी होनी चाहिये। अिसका हमने कुछ अनुभव भी किया है। आज तक ध्यानके लिअे अेक स्थान पर बैठना और बहुतसी क्रियाओंका त्याग करना आवश्यक माना गया था। प्राथमिक अवस्थामें अुसकी कुछ जरूरत हो सकती है। परन्तु ध्यान-प्रक्रियाका अुत्कर्ष अुससे नहीं होता है। अुत्कर्ष तो तब होता है, जब अखंड क्रिया चल रही हो परन्तु अुसका क्रियापन मालूम नहीं होता हो। जैसे हमारा श्वासोच्छ्वास चलता है तो अुस क्रियासे हमें कोअी बाधा नहीं मालूम होती है, बल्कि अगर वह समत्वयुक्त चलता है तो अुससे मदद ही मिलती है, अुसी तरह शरीर-परिश्रमात्मक शोषणरहित अुत्पादक क्रिया ध्यानके साथ-साथ चल सकती है। अुससे ध्यानमें कोअी खलल पहुंचनेका कारण नहीं। हमें लगा कि अिस दिशामें ध्यानयोगकी कोशिश होनी चाहिये। तो अभी तक जो ध्यानयोग चला अुसकी अिससे पूर्ति होगी।

दूसरा विचार यह है कि अखंड परिव्राजक वर्गके बिना समाजमें ज्ञान बहता रहना संभव नहीं और साधककी आसक्ति भी अुसके बिना सर्वथा नहीं मिटेगी। अिसलिअे समाज-कल्याणकी योजनामें परिव्रज्या अनिवार्य दिखती है। जैन, बौद्ध, शंकर, रामानुज, आदि संप्रदायवालोंने परिव्राजक वर्ग खड़ा करनेके जो प्रयोग किये वे बहुत महत्त्वके हैं। क्योंकि सैकड़ों सालों तक ये प्रयोग चले, अुनको वेग मिलता गया और अुनका प्रभाव जनता पर, राजसत्ता पर, साहित्य और कला पर — जीवनके हर क्षेत्र पर वर्षों तक रहा है। भारतकी समृद्धिका बहुत बड़ा श्रेय अुन्हींको है। परंतु अिन प्रयोगोंमें कुछ कमियां थीं। पहली कमी यह थी कि वे परिश्रमनिष्ठ नहीं थे। वैसे वे चंक्रमण तो करते थे, आलसी नहीं रहते थे। वे यहां तक कहते थे कि भगवानने रात ध्यानके लिअे दी है और दिन ज्ञानप्रचारके लिअे दिया है।

www.vinoba.in

यानी आरामके लिअे कोअी समय ही नहीं दिया। फिर भी जब तक मनुष्य खाता है, तब तक अुसे अुत्पादक परिश्रममें हिस्सा लेना चाहिये, चाहे प्रतीकके तौर पर ही क्यों न हो। प्राचीन परिव्राजक भी भोजनको यज्ञस्वरूप ही समझते थे। फिर भी जो खाता है अुसे अुत्पादक ब्रह्मक्रियामें हिस्सा लेना चाहिये यह बात अुसमें नहीं थी। अिस कमीको हम दूर करना चाहते हैं। वे भिक्षा पर निर्भर करते थे। हम भी भिक्षा पर ही रहते हैं और भिक्षासे ही हमारा निस्तार होगा, यह हम जानते हैं। हम भिक्षाको पावन मानते हैं। वे लोग भिक्षाके साथ साथ सेवा भी करते थे, अिसलिअे अुन्हें भिक्षाका हक था। वे तो महान थे। परंतु भिक्षाके साथ साथ अुत्पादक शरीर-परिश्रमकी निष्टाको अेक यमके तौर पर, नियमके तौर पर, नहीं मानना चाहिये। जैसे सत्य, अहिंसा आदि अव्वल दर्जेकी चीजें हैं वैसे ही अुत्पादक शरीर-परिश्रममें निष्ठा भी होनी चाहिये। अिस दृष्टिसे हम अुसको हमारी परिव्रज्यामें दाखिल करना चाहते हैं। हम मानते हैं कि अुत्पादक श्रम ब्रह्मकर्म है और वह 'सर्वेषामविरोधेन' होता है। हमसे जो कुछ शोषण होता है, अुससे मुक्ति अिस ब्रह्मकर्मके जरिये मिलती है।

तीसरी बात जो हम कहना चाहते हैं वह कुछ नयी नहीं है। पहली दो बातें तो हमें हमारे चिंतनसे मिली हैं। परंतु यह बात विज्ञानके युगने पैदा की है। अिसका अगर कुछ श्रेय किसीको देना है तो गांधीजीको देना होगा। वह बात यह है कि साधना सामूहिक तौर पर होनी चाहिये। यानी पंद्रह-बीस मनुष्योंको अिकट्ठा होकर साधना करनी चाहिये, अितना ही अुसका अर्थ नहीं है। बल्कि अुसका अर्थ यह है कि समूह-जीवन ही जीवन है। व्यक्तिका जीवन जितने अर्थमें समाजका हिस्सा है, अुतने अर्थमें ही वह जीवन है अैसा माना जायेगा। समाजसे अलग जीवन हो नहीं सकता है। अच्छी हालतमें समाजसे अलग जीवनका मतलब मुक्ति होगा और खराब हालतमें अुसका अर्थ मृत्यु होगा। परंतु जो समाजसे अलग है, अुसमें जीवन नहीं है। जीवन तो सामाजिक ही है। हमारा शरीर भी अेक समाज है अिसलिअे अुसमें जीवन है। अुसमें से नाक, कान, आंखें आदि चीजोंको अलग किया जाय तो अुनमें जीवन नहीं रहेगा। अिसलिअे हमारा हरअेक सद्गुण सामाजिक होना चाहिये। समाज ही जीवन है और हम अुसमें जितने अंशमें हिस्सा लेते हैं अुतने अंशमें हमें जीवनका अनुभव आता है। अिसलिअे हमारा हरअेक सद्गुण सामाजिक होना चाहिये। अब वैराग्यकी बात लीजिये। वह अुचित है या अनुचित है, कितनी मात्रामें अुचित है और कितनी मात्रामें अनुचित है, अिन चारों प्रश्नोंका अुत्तर कुल समाजके लिअे सोचकर दिया जायगा। समाजके लिअे क्या जरूरी है, वह सोचा जायगा। समाजके लिअे जितनी मात्रामें वह जरूरी है अुससे अधिक मात्रामें अगर किसीमें वैराग्य है तो या तो वह अेकांगी विशेषज्ञ है या अुसमें विकृति है। अिस तरह सब गुणोंके बारेमें सामूहिक दृष्टिसे सोचना होगा और हमारी कुल साधना सामाजिक होनी चाहिये। ये तीन बातें हमारी आज तककी संस्कृतिमें प्रकट होनी चाहिये। अब अिसके लिअे हमें जो काम करने होंगे अुनकी कअी शाखायें हैं।

हमने समन्वय आश्रमके लिअे बोधगयाका क्षेत्र चुना अिसमें अेक दृष्टि है। हम चाहते हैं कि वहां पर पांच छः प्रकारके काम हों: (१) बोधगयाके आसपासके क्षेत्रमें ही चोरी हो तो हम असफल हैं अैसा कहना होगा। हमारे समाजकी जो कमियां हैं वे आसपासके क्षेत्रसे निकल जानी चाहिये। हम अपना क्षेत्र बहुत बड़ा न मानें, छोटा ही मानें। दीपक छोटा ही हो तो छोटेसे क्षेत्रमें अंधकार मिट जाता है, लेकिन दीपकसे यह अपेक्षा की जाती है कि अुसके अिर्द-गिर्द अंधकार न रहे। वैसे ही हमारे आसपासके लोगोंकी सेवा गुणविकासके खयालसे हमें करनी चाहिये। (२) वहां पर जो साधक रहेंगे वे अतिरिक्त नहीं, समत्वयुक्त हों लेकिन अपना जीवन शरीर-परिश्रम पर आधारित रखें। दानमें जो पैसा मिलेगा अुसका अुपयोग साधकोंके जीवनके लिअे न हो। अुनका जीवन अुत्पादक परिश्रमसे ही चले और किसीसे दान लेना है तो वह भी परिश्रमका ही लेना होगा। वहां पर जो मकान आदि बनाने हैं अुनके लिअे हम अुत्पादक परिश्रमके ही दानका आग्रह नहीं रखते हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि हम आदर्श परिस्थितिमें काम नहीं कर रहे हैं। (३) हमारी संस्कृतिकी अेक कमी है — वह आधुनिक संस्कृतिकी कमी है, प्राचीन संस्कृतिकी नहीं — कि हम लोगोंमें यद्यपि व्यक्तिगत स्वच्छताका कुछ भान है तो भी सामूहिक स्वच्छताका भान कम है। अिसलिअे हम चाहते हैं कि बोधगयाका क्षेत्र अत्यंत स्वच्छ-निर्मल रहे। अगर यह काम होगा तो बाहरसे जो लोग आयेंगे अुनको वहां पर स्वच्छताका दर्शन होगा। अुनकी यात्रा सफल होगी, हमसे अुनकी कुछ सेवा होगी और हमारी सारी दृष्टि साक्षात् अुनके अनुभवमें आयेगी। शरीर-परिश्रमके समान शरीर-स्वच्छताको भी हमें नित्य-यज्ञ मानना चाहिये। (४) वहां पर विदेशोंसे लोग आते हैं तो अुनके साथ विचारोंका आदान-प्रदान हो, कुछ सत्संग हो। अिसके साथ आतिथ्य भी हो। अिसमें हम बीमारकी सेवाको जोड़ सकते हैं। (५) हम चाहते हैं कि बिहारमें जो कार्यकर्ता हैं अुनके लिअे बोधगया अेक विरामस्थान हो। वहां आकर अुन्हें कुछ विरति प्राप्त हो, मनके लिअे कुछ शांति मिले। वैसे वे अेक-दो घंटे परिश्रम कर लेंगे, लेकिन अुस स्थानका अुपयोग अुनको मानसिक शांति हासिल करनेमें करना चाहिये।

मैंने सर्व-सेवा-संघवालोंसे यह भी कहा है कि समन्वय आश्रममें सर्वोदयका अेक नित्य प्रदर्शन हो, जिसमें कताअी, बुनाअी, ग्रामोद्योग आदिका कुछ दर्शन मिल सके।

विनोबा

तेलघानी और तेलमिल

अेक शिक्षक लिखते हैं:

> "आप ग्रामोद्योगोंकी हिमायत करते हैं न? अिस समय लुणावाड़ा स्टेशन पर अेक नअी तेलमिल खड़ी की जा रही है। सारे लुणावाड़ा तालुकेमें अैसी तेलमिल नहीं होगी। . . . अैसा कितना ही काम आज चल रहा है, जो ग्रामोद्योगोंको तोड़नेवाला और राज्यको नुकसान पहुंचानेवाला है।"

यह सच है कि 'हरिजन' खादी और ग्रामोद्योगोंकी हिमायत करता है। लेकिन लिखनेसे जो काम होता है, अुसकी हमेशा सीमा रहती है। अन्तिम बल तो लोकबल ही है।

नअी तेलमिलका खुलना यह बताता है कि मिल खोलकर नफा कमानेकी अिच्छा रखनेवाले धनीवर्गको अभी यह आशा है कि अुसका तेल लोगोंमें बिक सकेगा। यह आशा नष्ट हो जाय तो कोअी मिल न खोले।

और तेलमिल न खुले तो लोगोंको तेल नहीं मिलेगा, अैसा हो तो तेलघानियां चलनी चाहिये और अुनका तेल जनतामें बिकना चाहिये। यह पत्र लोगोंको यह जरूर समझाना चाहता है कि घानीका तेल अच्छा, स्वास्थ्यप्रद और प्रजाको सच्चा आर्थिक लाभ पहुंचानेवाला है। यह समझकर अगर लोग तेलघानीको बढ़ावा दें, तो तेलमिल खोलनेकी कोअी हिम्मत ही नहीं करेंगे।

५-१२-'५५ म० प्र०
(गुजरातीसे)

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

२४ दिसम्बर १९५५

यंत्रोद्योगों और हाथ-अुद्योगोंके बीच होड़

सब कोअी जानते हैं कि दूसरी पंचवर्षीय योजनामें खादी और ग्रामोद्योगोंको स्थान प्राप्त हुआ है। वह काम अब आगे बढ़ रहा है। अुस योजनामें अिस कामकी कैसे व्यवस्था की जाय, अिसका तफसीलवार विचार करके अेक संपूर्ण योजना पेश करनेके लिअे योजना-कमीशन द्वारा नियुक्त की हुअी कर्वे-समितिकी रिपोर्ट अब प्रकाशित हो गअी है।

अिस समितिका कार्य यह था:

"गृह-अुद्योगों तथा छोटे पैमानेके अुद्योगोंके लिअे योजनाकी रूपरेखाके मसौदेमें की गअी व्यवस्थाको और अर्थ-शास्त्रियोंकी समिति द्वारा पेश किये गये निवेदनमें की गअी सिफारिशोंको ध्यानमें रखकर अुद्योगवार और संभव हो वहां राज्यवार दूसरी पंचवर्षीय योजनाके अेक अविभाज्य अंगके रूपमें अिन अुद्योगोंके विकासके लिअे निर्धारित की गअी साधन-सामग्रीके सम्बन्धमें योजना तैयार करना।

"समितिसे खास तौर पर नीचेके अुद्देश्य ध्यानमें रख कर अपनी योजना तैयार करनेको कहा गया था:

(१) योजना-कालमें जिनकी साधारण तौर पर मांग रहती है अैसी रोजाना अुपयोगकी चीजोंके बढ़े हुअे अुत्पादनका बड़ा हिस्सा गृह-अुद्योगों और छोटे पैमानेके अुद्योगोंको पूरा करना चाहिये।

(२) अिन अुद्योगोंमें दिये जानेवाले काम-धन्धेमें दिनोंदिन वृद्धि होती रहनी चाहिये। और,

(३) अिन अुद्योगोंमें मालका अुत्पादन तथा बिक्री मुख्यतः सहकारी पद्धतिसे होनी चाहिये।"

अिसके अनुसार जांच करके कर्वे-समितिने अ० भा० खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड द्वारा अपने सामने पेश की गअी योजनाका अधिकांशमें समर्थन किया है, जिसके लिअे वह हमारे धन्यवादकी पात्र है। अुसने लगभग २५०–३०० करोड़ रुपयेके कामोंकी अेक विस्तृत योजना केन्द्रीय सरकारके योजना-कमीशनको सौंपी है। अैसा करके अिस समितिने सचमुच देशकी सच्ची सेवा की है।

लगभग ४,८०० करोड़के विकास-कार्योंके बड़े बजटमें अूपरकी रकम कोअी बड़ी नहीं मानी जायगी। परन्तु ग्रामोद्योगोंके पुनरुद्धार और स्थापनाका यह कार्य केवल रुपये खर्च करनेका नहीं है। यह कार्य तो आम लोगोंमें जाकर अुन्हें जाग्रत करके — अुनका आलस्य और प्रमाद दूर करके — अुन्हें राष्ट्रके पोषक कामोंकी दिशामें मोड़नेका है। योजना-कमीशन भी अिस बातको समझता है। अिसलिअे अुसे अिस बातका डर भी है कि वह किस हद तक यह कार्य करनेमें सफल होगा। फिर भी राष्ट्रकी स्वतंत्र जनताके बारेमें तो अैसी अश्रद्धा कैसे रखी जा सकती है? योजना-कमीशनको, सरकारको और खास करके अुसके नौकरोंको अिस डर, शंका या अश्रद्धाको दूर रखकर अपना काम करना होगा। तभी भारतमें हम जो आर्थिक क्रान्ति, सामाजिक समानता तथा न्यायका स्तर फैला हुआ देखना चाहते हैं, अुसका मार्ग सरल बनेगा।

अैसा कहा जा सकता है कि कर्वे-समितिने अिस भावी क्रान्तिका आरंभ करनेका कार्य किया है। अिसके लिअे अुसने विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्थाका सिद्धान्त स्वीकार किया है। लेकिन आजकी परिस्थितियोंमें अुसकी भी अेक खास मर्यादा तो है ही, जिसके बाहर वह नहीं जा सकती।

अुसे जन्म देनेवाले योजना-कमीशनकी जो मर्यादा है, वही मर्यादा अुसकी भी मानी जायगी। कमीशनने खादी और ग्रामोद्योगोंके विकासके बारेमें अेक विशेष मर्यादित दृष्टि और रवैया रखा है। फिर भी अुसने स्पष्ट शब्दोंमें यह स्वीकार नहीं किया है कि देशकी आर्थिक पुनर्रचनामें अुनका अेक खास अनिवार्य और बुनियादी स्थान है और वह बढ़ता रहेगा। दुनियामें यह अेक नये ही प्रकारका विचार है, अिसलिअे अिसके पीछे कुछ हद तक प्रयोगकी दृष्टि रहती है। शायद अिसीलिअे सरकार अिस दिशामें सावधान रह कर काम कर रही है। फिर भी यह याद रखना चाहिये कि अिस कामसे सम्बन्धित नीतिके अेक-दो मुद्दे तो पहली पंचवर्षीय योजनाके समयसे ही स्वीकार कर लिये गये हैं। कर्वे-समितिकी रिपोर्टको समझनेके लिअे यह बात ध्यानमें रखना जरूरी है।

पहली पंचवर्षीय योजनाने नीचेके सिद्धान्त स्वीकार किये थे:

"बड़े पैमानेके तथा छोटे पैमानेके अुद्योगोंके लिअे समन्वित अुत्पादनके कार्यक्रमके सिद्धान्तकी स्वीकृति पहली पंचवर्षीय योजनाका अेक महत्त्वका लक्षण था। अुस योजनामें की गअी सिफारिशोंमें से अेक सिफारिश यह थी कि कार्य-क्षमता बढ़ानेके लिअे टेकनिकल सुधार, शोध और दूसरे कदमोंके सिवा आर्थिक नीतिका मुख्य ध्येय अैसा क्षेत्र मुहैया करनेका होना चाहिये जिसमें प्रत्येक गृह-अुद्योग अपना संगठन कर सके, तथा बड़े पैमानेके अुद्योग और गृह-अुद्योगोंके बीच जहां होड़ पैदा हो वहां समन्वित अुत्पादनका कार्यक्रम तैयार करनेका होना चाहिये। समन्वित अुत्पादनके कार्यक्रमकी कुछ बातें ये हो सकती हैं: (क) अुत्पादनके क्षेत्र सुरक्षित रखना, (ख) बड़े पैमानेके अुद्योगोंके अुत्पादनकी गुंजाअिशको बढ़ने न देना, (ग) बड़े पैमानेके अुद्योगों पर 'सेस' लगाना, (घ) कच्चा माल मुहैया करनेकी व्यवस्था, और (ङ) शोध तथा तालीम वगैराका प्रबन्ध करना।"

परन्तु अिन सिद्धान्तोंके आधार पर अुसने कोअी विस्तृत विचार नहीं किया था। तथा योजनाके आरंभके तीनेक बरस बाद अेक खादी-ग्रामोद्योग बोर्डकी स्थापनाके सिवा अन्य कोअी कदम अुठाया नहीं गया था। यहां मैं यह बात हरगिज नहीं सुझाना चाहता कि बोर्डकी स्थापनाका कदम कम महत्त्वका था। बल्कि सच पूछा जाय तो योजना-कमीशनके अिस कदमने छोटे माने जानेवाले अिन ग्रामोद्योगों और गृह-अुद्योगोंका गौरव देशके सामने स्पष्ट करनेमें बड़ी मदद की है। अुसीकी वजहसे आज कर्वे-समितिका जन्म हो सका और अब यह आशा बंधने लगी है कि दूसरी पंचवर्षीय योजनामें अिन अुद्योगोंका काम आगे बढ़ेगा।

अिस दिशामें आगे बढ़नेमें जो मुख्य अुलझन खड़ी हुअी है वह यही है कि ग्रामोद्योगोंके साथ बड़े पैमानेके यंत्रोद्योगोंका मेल कैसे बैठाया जाय। अिस काममें बड़े अुद्योगोंके मालिकोंके स्थापित स्वार्थ रुकावट डालते हैं। जैसा कि हमने अूपर देखा, यह अुलझन दूर करनेके लिअे पहली पंचवर्षीय योजनाने अपनी नीतिके दो मुद्दे स्पष्ट किये थे:

१. अिन दो क्षेत्रोंको अुत्पादनका काम बांट दिया जाय।

२. नये बढ़नेवाले यंत्रोद्योगों पर नियंत्रण रखा जाय। अुनकी मर्यादा आज जितनी है अुतनी ही मानी जाय।

अिस सम्बन्धमें केन्द्रीय सरकारकी ही अेक समितिने योजना-कमीशनको अेक विशेष सिफारिश की है, जिससे आगेका तीसरा मुद्दा खड़ा हुआ है। यह मुद्दा नया नहीं है, बल्कि अूपरके दो मुद्दोंके गर्भमें ही मौजूद था। अुस मुद्देको हम देखें।

पाठक जानते हैं कि कुछ समय पहले चावलकी हाथ-कुटाअी समितिने अपनी जांच की थी। अुसने अपनी रिपोर्ट सरकारके सामने

www.vinoba.in

पेश कर दी है। अुसमें समितिने अेक यह क्रान्तिकारी सिफारिश की है कि हाथ-कुटाअीका काम आज लोग अधिकतर अपने घरोंमें करते हैं; अुसमें यंत्रोंका हमला अभी शुरू ही हुआ है। अुनका काम अभी बहुत बढ़ा नहीं है। अिसलिअे हाथ-कुटाअी अुद्योग द्वारा बेकारी दूर करनी हो तो यंत्रोंको आसानीसे अिस अुद्योगके क्षेत्रसे हटाया जा सकता है। अतः हाथ-कुटाअी समितिने यह सिफारिश की है कि राष्ट्र थोड़ा भी ध्यान दे तो चावल-कुटाअीके यंत्रोद्योगका अन्त किया जा सकता है। अिसमें बहुत खर्चका भी सवाल नहीं है। और अुससे बेकारी दूर करने तथा जनताको स्वास्थ्यप्रद अन्न देनेका बड़ा लाभ होगा।

समितिकी सिफारिश अेक बड़े व्यापक सिद्धान्तके आधार पर की गअी है। वह यह कि यंत्रोद्योगोंका क्षेत्र जनताके कपड़े, खानपान और मकानके अुद्योगोंके क्षेत्रसे बाहर रहना चाहिये। ये जरूरतें पूरी करनेवाले अुद्योग गांवोंमें फैली हुअी हमारी विशाल जनताके लिअे सुरक्षित रखें जायं, ताकि अुनकी बेकारीका प्रश्न स्थायी रूपमें हल हो। अलबत्ता, आर्थिक और औजारोंकी दृष्टिसे अिन अुद्योगोंकी अुन्नति हो अिसके लिअे धन और विज्ञानकी सहायता अब अुन्हें मिलनी चाहिये। अैसा करनेसे देशमें बेकार पड़ी हुअी अपार श्रमशक्तिका अिन अुद्योगोंमें अुपयोग होगा और जनताके हाथ-अुद्योगोंका माल अच्छा और सस्ता होगा तथा मात्रामें बढ़ेगा। आज अुनकी जो अुपेक्षा की जा रही है अुसे दूर करके हमारे अिन सच्चे राष्ट्रीय अुद्योगोंकी ओर सरकारको ध्यान देना चाहिये और अुन पर पैसा खर्च करना चाहिये।

देशकी आर्थिक पुनर्रचनाके अिस व्यापक सिद्धान्तके आधार पर चला जाय तो जैसे-जैसे जनता ग्रामोद्योगोंको अपनाती जाय और अुनका विकास करती जाय, वैसे-वैसे अुचित क्रमका विचार करके यंत्रोद्योगोंके मालिकोंको कपड़ा, तेल, दूध-घी तथा अन्य खाद्यपदार्थोंके कारखाने बन्द करते जाना चाहिये।

कर्वे-समितिको अिस मूल प्रश्न पर विचार करनेकी जरूरत अिसलिअे हुअी कि हाथ-कुटाअी समितिकी रिपोर्ट तथा अुसके आधार पर की गअी खादी-ग्रामोद्योग बोर्डकी सिफारिशके बारेमें विचार करके अपनी रिपोर्ट पेश करनेकी जिम्मेदारी अुसे सौंपी गअी थी। अिस विषयमें अिस बातसे आश्चर्य होता है कि कर्वे-समितिने हाथ-कुटाअी समितिके प्रस्तावको स्वीकार नहीं किया। अिसमें असल गलती तो यह होती है कि खादी और ग्रामोद्योगोंके मूल सिद्धान्त — विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था — का पालन नहीं होता। यह सिद्धान्त जब कर्वे-समिति स्वीकार करती है, तब तो यही कहा जायगा कि अुसने बिना कारण यंत्रोद्योगोंके प्रति पक्षपात दिखाया है।

खादी और ग्रामोद्योगोंकी नीतिके अिस सिद्धान्तके खिलाफ देशके बड़े अुद्योग — कपड़ा-मिलें, तेल-मिलें, शक्कर-मिलें वगैरा — जाग्रत हो गये हैं। अेक बार अिस नीतिको रास्ता मिला कि फिर तो आज हलर-शेलर मिलोंकी बारी है, तो कल हमारी भी बारी आ सकती है! — कहीं यह छिपा डर तो अिसके पीछे काम नहीं कर रहा है?

अिस कारणसे यदि देशके सारे अुद्योगवादी हित गुप्त रूपमें संगठित मोर्चा भी बना रहे हों तो अुन लोगोंको अिससे कोअी आश्चर्य नहीं होगा जो पूंजीवादका युरोपीय अितिहास जानते हैं। कर्वे-समितिने हाथ-कुटाअी समितिकी निर्दोष सिफारिशको स्वीकार कर लिया होता तो अच्छा होता। आशा रखें कि केन्द्रीय सरकार यह गलती सुधार लेगी।

१५-१२-'५५ **मगनभाई देसाई**

(गुजरातीसे)

युनिवर्सिटी शिक्षणका स्तर

नीचे ३० नवम्बरको पी० टी० आअी० द्वारा कर्नूलसे दी गअी खबर अुद्धृत की गअी है:

आन्ध्र पब्लिक सर्विस कमीशनकी १९५४–५५ की प्रशासनिक रिपोर्टमें कहा गया है कि "आन्ध्र अेज्युकेशनल सबॉर्डिनेट सर्विसमें सहायक लेक्चररकी जगहके लिअे जो अुम्मीदवार आये थे, अुनमें से बहुत थोड़े शुद्ध और मुहावरेदार अंग्रेजी बोल सके।"

रिपोर्ट आगे कहती है, "क्रियाओंके अुचित कालोंके अुपयोगमें भी आन्ध्र युनिवर्सिटी विभागसे आये हुअे लगभग सारे अुम्मीदवार अैसी सामान्य भूलें करते थे, जिनकी माध्यमिक शालान्त परीक्षा पास करनेवाले विद्यार्थियोंसे भी आशा नहीं रखी जाती।

"राजनीतिका विशेष विषय लेकर अितिहासमें विशिष्ट योग्यता (ऑनर्स) प्राप्त करनेवाले विद्यार्थियोंकी कुछ बड़ी बड़ी गलतियां ये थीं: 'फार्मोसा युरोपमें है'; 'लोकसभा भारतकी अेक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक पार्टी है'; 'आन्ध्र अेक अवशिष्ट (रेसीड्युअरी) राज्य है'; 'चीन और रूसके बीच लड़ाअी चल रही है'; 'रीपेट्रिअेशन (स्वदेशमें लौटाना) का अर्थ है तटस्थ लोगोंकी देखभाल करना और तटस्थताकी रक्षा करना'; 'जिब्राल्टर अफ्रीकामें है और फ्रान्सके अधिकारमें है'; 'अेक-सेदस्य निर्वाचन-क्षेत्रका अर्थ है अैसा राजनीतिक संगठन या तंत्र, जिसमें धारासभाका अेक ही गृह होगा।'"

रिपोर्टमें बताया गया है कि अर्थशास्त्रके बहुतसे विद्यार्थी पंचवर्षीय योजनाके बारेमें कुछ भी नहीं जानते थे। अुनमें से अेक विद्यार्थीने कार्ल मार्क्सका नाम भी नहीं सुना था।

रिपोर्टमें कहा गया है कि प्राणीशास्त्रके विद्यार्थी लुअी पाश्चरके बारेमें कुछ नहीं जानते थे और कुत्तों आदिको होनेवाले जलांतक रोग (रेबीज)का अर्थ अुन्हें मालूम नहीं था।

अेक भौतिकशास्त्रके ऑनर्सके विद्यार्थीने अपने अुत्तरमें कहा कि माअिक्रोमीटर (सूक्ष्म मापक यंत्र) अेक मीटरका दस लाखवां भाग है और शरीरकी निश्चलता (अिनर्शिया ऑफ बॉडी) का अर्थ है अुसकी काम करनेकी अयोग्यता।

रिपोर्टमें कहा गया है: "लगभग सारे अुम्मीदवारोंने अपने-अपने विशेष क्षेत्रोंमें भी अपनी अयोग्यताका बड़ा निराशाजनक प्रदर्शन किया। सामान्य ज्ञानके बारेमें तो अुनका हाल कारकुनकी जगहके लिअे अर्जी करनेवाले माध्यमिक शालान्त परीक्षा पास किये हुअे अुम्मीदवारोंसे भी बुरा रहा।"

"अगर यह बात ध्यानमें रखी जाय कि अधिकतर अुम्मीदवार युनिवर्सिटीसे पढ़कर ताजे ही निकले थे, विज्ञानके अधिकतर अुम्मीदवार दो दो डिग्रियां — ऑनर्स और अेम० अेस-सी० डिग्री — रखते थे, अुनमें से काफी लोग खानगी कॉलेजों और स्कूलोंमें काम करते थे और सारे अुम्मीदवार पहली या दूसरी श्रेणीमें पास हुअे थे, तब तो भविष्य निश्चित रूपसे अन्धकारमय लगता है। लेक्चररकी जगहोंके लिअे चुने जानेवाले अेक भी अुम्मीदवारने अैसी छाप नहीं डाली कि वे शिक्षणके धन्धेके लिअे योग्य हैं या शिक्षा-विभागके लिअे किसी भी दृष्टिसे लाभदायक सिद्ध होंगे या अुच्चतर शिक्षणके ध्येयमें सहायक हो सकेंगे। अिसमें शक नहीं कि चुने गये अुम्मीदवार सबमें अुत्तम हैं, लेकिन अुनमें से अेकने भी असाधारण योग्यताकी छाप नहीं डाली — सभी बहुत मामूली योग्यता रखनेवाले हैं।"

www.vinoba.in

मुख्य प्रश्न तो यह है कि अुच्चतर शिक्षणके स्तरके सम्बन्धमें अिस निराशाजनक स्थितिको मिटानेका अुपाय क्या है? अगर शिक्षक ही अूपर बताअी गअी योग्यतावाले होंगे, तो अुनके विद्यार्थियोंसे हम क्या आशा रख सकते हैं? बेशक, अिसके लिअे किसी बहुत कड़े अुपायकी जरूरत है। मेरा यह सुझाव है कि आज सरकारी नौकरियोंके लिअे युनिवर्सिटी डिग्रियोंको जो अेकाधिकारका महत्त्व प्राप्त हो गया है अुसका जल्दीसे जल्दी अन्त करना चाहिये। अिससे अुच्चतर शिक्षणको व्यापारकी वस्तु बन जानेकी भयंकर स्थितिसे अुबारनेका रास्ता खुल जायगा, जिसका आज वह शिकार बना हुआ है।

५-१२-'५५ मगनभाई देसाई

(अंग्रेजीसे)

आजके भारतमें भूदानका कार्य

आजादीके आठ वर्षोंने भारतको दुनियाके राष्ट्रोंमें आदर और अिज्जतका स्थान दिलाया है। अुसने अेक अैसे राष्ट्रकी प्रतिष्ठा प्राप्त की है, जो बिना किसी अपवादके दुनियाके हर देशके साथ शांतिपूर्वक रहनेके लिअे अुत्सुक है। दक्षिण अफ्रीकाके बारेमें भी वह दमनके शिकार बने हुअे लोगोंके साथ किये जानेवाले अन्यायोंको दूर करानेके लिअे शान्तिपूर्ण मार्ग ही खोजना चाहता है; और अिस हेतुकी सिद्धिके लिअे अुसने अपने नागरिकों पर अलौकिक नियंत्रण रखा है। जानबूझकर भड़कानेवाले कारण पैदा करनेके बावजूद, अुदाहरणके लिअे पुर्तगाल और पाकिस्तानके मामलेमें, मनकी स्थितिको शांतिपूर्ण बनाये रखनेके भारतके दृढ़ प्रयत्नने दुनियाका आदरपूर्ण ध्यान अुसकी ओर खींचा है। लेकिन हमारे देशके करोड़ों लोग आजादीका चमकीला प्रकाश अनुभव करें, अुसके पहले हमें बहुत बड़ी मंजिल तय करनी होगी। अपने ग्रामवासी भाअियोंको हमने जो वचन दिया है, अुसे अभी तक हम पूरा नहीं कर पाये हैं।

हम देशकी हालत पर अेक नजर डालें। हर १० भारतीयोंमें से ७ ग्रामवासी हैं। वे ही सच्चा भारत हैं, न कि हमारे अंग्रेजी बोलनेवाले शहरी वर्ग। राजनीतिक क्षेत्रमें प्रत्येक ग्रामजनको मत देनेका अधिकार मिला हुआ है। अपनी बहुत भारी संख्याके कारण मत-पेटीके जरिये व्यक्त की गअी अुसकी अिच्छा सर्वोच्च सत्ता रखती है। लेकिन वह अुसके जीवनकी वास्तविकता नहीं बन पाअी है, और अगर यह सर्वसत्ताधारी भारतीय नागरिक दुनियावी चीजोंके रूपमें अपनी शक्तिका नाप निकाले तो वह अिसे अेक कानूनी कल्पना भी मान सकता है। राजनीतिक दृष्टिसे देशमें लगभग अुसकी कोअी आवाज नहीं है। सामाजिक दृष्टिसे वह जाति और आपसी फूटके दलदलमें फंसा हुआ है। सांस्कृतिक दृष्टिसे अेक ओर अुसके जीवनमें आध्यात्मिक मूल्योंका स्तर नीचे गिर रहा है और दूसरी ओर शहर तथा अुसके भद्दे तौर-तरीकोंकी नकल करनेकी आक्रामक प्रेरणाका वह शिकार बन रहा है।

आर्थिक दृष्टिसे देखा जाय तो धन-दौलतके प्रति वह आकर्षित होता है और धनसे प्राप्त होनेवाले अैश-आराम भोगनेकी अिच्छा रखता है। लेकिन अुसे अितना दबा दिया गया है कि वह अपना सिर अूंचा नहीं अुठा सकता। अिसके सिवा, आजकी आर्थिक व्यवस्था भी अुसकी जरूरतोंको प्रधानता नहीं देती। वह चीजोंका अुपयोग करनेवाले मनुष्यकी जरूरतोंके बजाय चीजोंके अुत्पादनको अधिक महत्त्व देती है। शहरों और गांवोंमें बढ़ रही बेकारीने गरीबी और सामाजिक भेदोंको बढ़ा दिया है। ग्रामोद्योगोंके निरन्तर हो रहे ह्रासने शहर और गांवके आर्थिक संयोजनकी समस्याको ज्यादा कठिन बना दिया है। अुदाहरणके लिअे, पहली पंचवर्षीय योजनाके अर्सेमें लोहे और फौलादकी चीजोंके भाव लगभग दस प्रतिशत बढ़ गये, जब कि किसानके अनाजके भाव दस प्रतिशत घट गये। अिस तरह पांच सालमें कीमतोंके ढांचेमें लगभग २० प्रतिशतका फर्क पड़ गया है।

अिसके अलावा, शारीरिक और मानसिक श्रमके बीचकी खाअी आज भी वैसी ही भयंकर है जैसी कि पहले कभी थी। जिस आदमीकी आय जितनी ज्यादा होती है, अुतना ही कम शारीरिक श्रम वह करता है। हमारे अधिकतर कुशल कारीगरोंकी मजदूरी या तनखाहें किसी अिंजीनियर, जज, प्रोफेसर या मंत्रीसे बहुत कम हैं। समाजमें कुशलतासे किये जानेवाले शारीरिक श्रमकी प्रतिष्ठा मुंशीगिरीसे कम है।

आजादी जरूर आअी है, लेकिन पुराने स्थिर मूल्योंका, कुचल डालनेवाले स्तरोंका, आज भी वैसा ही बोलबाला है।

बिना ज्यादा सोचे-विचारे यह कहा जा सकता है कि अगर आजकी हालतोंमें कोअी परिवर्तन नहीं हुआ, तो ग्रामवासी और अुनके साथ सारा देश भी रसातलको चला जायगा। यहां तक कि बड़ी बड़ी कुरबानियोंके बाद मिली हुअी हमारी आजादी भी खतरेमें पड़ जायगी।

यह सब परिवर्तनका — मौजूदा व्यवस्थाको जड़मूलसे बदलने और नये मूल्योंकी स्थापनाका तकाजा करता है। परिवर्तनकी आवश्यकताका जितना महत्त्व है, अुतना ही महत्त्व परिवर्तन करनेवाली पद्धतिका भी है। अगर यह परिवर्तन करनेके लिअे अनैतिक साधनों या अशुद्ध तरीकोंका अुपयोग किया जाय, तो जो समस्यायें परिवर्तनसे हल होंगी, अुनसे कहीं ज्यादा बड़ी और कठिन समस्यायें वह पैदा कर देगा। फिर, तेज गतिवाले सामाजिक परिवर्तनके बिना केवल नैतिक साधनों पर जोर दिया जाय तो आम लोग अिस प्रयत्नकी ओर आकर्षित नहीं होंगे और वह बेकार साबित होगा।

थोड़ेमें, हमारे दृष्टिकोणमें परिवर्तन होनेके साथ जल्दीसे जल्दी सामाजिक परिवर्तनकी भी जरूरत है। यह अुद्देश्य वर्गभेद पर जोर देनेसे और वर्गोंके बीच नफरत बढ़ानेसे पूरा नहीं होगा। बहुतसे गरीब लोग मिलकर कुछ दौलतमन्दोंका आसानीसे खात्मा कर सकते हैं। लेकिन अुससे वांछनीय समानता और न्यायकी स्थापना नहीं होगी। संग्रहकर्तासे घृणा और संग्रहका प्रेम दोनों साथ-साथ नहीं चल सकते। संग्रहवृत्तिको गलतीसे धन-दौलत नहीं मान लेना चाहिये। वास्तवमें अमीर वे हैं जो संग्रहकी भावनासे अूपर अुठे हुअे हैं; और जो लोग संग्रहको पवित्र मानते हैं वे गरीब हैं, भले वे पैसेदार हों या न हों। दुर्भाग्यसे संग्रहकी जड़ें भारतीय जीवनमें अुतनी ही गहरी जमी हुअी हैं जितनी कि जातिप्रथाकी। जातिकी तरह संग्रह या परिग्रहवृत्ति भी सामाजिक अेकताके विकास और मानव भावनाकी प्रगतिमें भारी रुकावट डालती है।

भूदान-आन्दोलन मालकियतकी बुराअी पर सीधी चोट करनेका प्रयत्न है। पहली चीजको पहले लेकर अुस आन्दोलनके प्रणेता आचार्य विनोबा भावेने जमीनसे अिसका आरंभ किया है। अुनका कहना है कि जिस प्रकार हवा, पानी, या आकाश पर किसीका अधिकार नहीं हो सकता, अुसी तरह जमीन पर भी किसीका अधिकार नहीं हो सकता। अुसकी व्यक्तिगत मालकियत खतम होनी चाहिये और अिसलिअे अुस पर सारे गांवका अधिकार होना चाहिये। गांवकी जमीन पर गांवकी मालकियत रहनी चाहिये और सबकी संमतिसे अुसका बंटवारा गांवके लोगोंमें अुनकी जरूरतके अनुसार किया जाना चाहिये। यह आसानीसे समझमें आ सकता है कि अगर जमीन बेचनेकी चीज न रह जाय, सारे गांवका अुस पर अधिकार हो और सारे गांववालोंमें वह न्यायपूर्वक और सर्वसंमतिसे बांट दी जाय, तो समाजकी मौजूदा व्यवस्था जड़से हिल जायगी और नअी व्यवस्थाका मार्ग सरल बन जायगा। अिससे

www.vinoba.in

सारा गांव अेक परिवारमें बदल जायगा और अुसके वातावरणमें कायापलट हो जायगा। आपसके अीर्ष्या-द्वेष और झगड़े या तो गांवमें ही निबटा लिये जायंगे या अुनका अन्त आ जायगा। स्वाश्रय और परस्पर सहायताके सिद्धान्तके आधार पर गांवका जीवन चलेगा। लोग जरूरी फसलें पैदा करेंगे और खुद ही कच्चे मालका तैयार माल बना लेंगे। ग्रामोद्योग फूलें-फलेंगे और गांव बाहरके किसी भी व्यक्तिके अिशारों पर नाचनेवाला नहीं रह जायगा। आर्थिक और सामाजिक समानतायें मिट जायंगी। सब लोग अेक परिवारकी तरह गांवके जीवनमें हिस्सा लेंगे और गांवके वातावरणमें पारिवारिक मूल्योंकी स्थापना हो जायगी। अिस तरह ग्रामवासी अपने अधिकारोंका सच्चा अुपभोग कर सकेंगे और अपनी मरजी और रुचिके अनुसार अपना जीवन बनायेंगे। अैसा होगा तभी सच्ची लोकशाही या जनताका राज्य कायम होगा।

स्पष्ट है कि कोअी कानून अैसा परिवर्तन नहीं कर सकता। वह जमीनके टुकड़ोंको तो जोड़ सकता है, लेकिन हृदयके टुकड़ोंको नहीं जोड़ सकता। वह खेतीकी मिट्टीको तो सुधार सकता है, लेकिन दिमागकी मिट्टीको नहीं सुधार सकता। भूदान जमीनको तोड़नेवालोंका आन्दोलन नहीं है। वह अैसे निष्ठावान सेवकोंका धर्म है, जो पुराने मूल्योंकी जगह नये मूल्योंकी स्थापना करनेका, अपरिग्रहको सामाजिक गुणके रूपमें स्थापित करनेका और मानसिक तथा शारीरिक श्रमके बीचकी दीवालको तोड़नेका निश्चय कर चुके हैं।

विनोबाका आन्दोलन अिसलिअे सबका ध्यान अपनी ओर नहीं खींचता कि वह सारी बुराअियोंका रामबाण अिलाज है, बल्कि अिसलिअे कि वह आजके दुश्चक्रको तोड़नेके लिअे ठोकी गअी पहली पच्चड़ है। वह सारे पुनर्निर्माण या सुधारका आधार है। बहुतसे राहतके कदम अन्नका अुत्पादन बढ़ा सकते हैं, ग्रामोद्योगोंको फिरसे जिला सकते और मजबूत बना सकते हैं और गांवोंमें अेक तरहके जीवनका संचार भी कर सकते हैं। लेकिन वे गांवके मानसको नहीं बदल सकेंगे, जो पुराने रीति-रिवाजों और मूल्योंसे अुसी तरह चिपटा रहेगा। अिसलिअे भूदान-आन्दोलनको अीमानदारीसे आजमानेकी जरूरत है।

पिछले साढ़े चार वर्षोंमें लोगोंकी ओरसे अुसका जो अुत्तर मिला है, वह अिस आन्दोलनके तत्त्वज्ञान और अिसके दृष्टिकोणकी यथार्थताको सिद्ध करता है। अुड़ीसाके अेक जिलेमें ६०० गांवोंका दान यह बताता है कि भूदानके विचारने किस गहराअी तक पहुंचकर हमारे लोगोंके हृदयको छुआ है। अुस दिन मैं बिहारके ग्रामीण क्षेत्रमें अेक छोटेसे जनसमूहसे मिला था। मैंने अुसे विनोबाके 'मिशन'के पीछे रहा विचार समझाया। अेक सफेद बालोंवाले लगभग ७५ वर्षके सद्गृहस्थ अपने दानके साथ आगे आये और बोले: "आपकी बात मैं समझ रहा हूं। हमारे देशमें सच्ची स्वतंत्रता स्थापित करनेका अेकमात्र मार्ग भूदान ही है। मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि सच्ची स्वतंत्रताकी स्थापना जब तक हमारे देशमें नहीं होती तब तक मैं मरनेसे भी अिनकार कर दूंगा।"

भारतके लाखों-करोड़ों लोग अब जाग कर आगे बढ़ रहे हैं और नये युगका अुदय होनेवाला है।*

(अंग्रेजीसे) सुरेश रामभाअी

* ऑल अिंडिया रेडियोके सौजन्यसे।

भूदान-यज्ञ

विनोबा भावे

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-५-०

नवजीवन प्रकाशन मन्दिर, अहमदाबाद-१४

राज्य-पुनर्रचना कमीशन और हमारी जनताकी आत्मा

हमारे धर्मग्रंथ आत्माको 'नित्य शाश्वत' कहते हैं। यही बात भारतके बारेमें भी सच है। हम वेदोंमें पढ़ते हैं: 'प्रतिगृह्णीत मानवं सुमेधसः'— हे बुद्धिमानो! व्यक्तिको और अुसकी प्रतिष्ठाको स्वीकार करो, मानव बनो और मानवदयाके गुणका अपनेमें विकास करो। अिस प्रकार भारतने मानवताके गौरवका गान सफलताके साथ गाया है। सर्वोच्च मानवतासे कम कोअी वस्तु अिस प्राचीन देशकी संस्कृतिको कभी स्वीकार नहीं हुअी है, न अैसी किसी वस्तुका हमारी संस्कृतिसे कभी मेल बैठा है। अिस देशके विद्वानों और सन्तोंने हमेशा मानवतासे भी अूंचे अुठनेकी आकांक्षा रखी और प्रयत्न किया है — मानवताके भी परे जाकर अपने सच्चे प्रेम, आदर और करुणाका क्षितिज अधिकसे अधिक व्यापक और विशाल बनानेका प्रयत्न किया है। यही कारण है कि गायको, अुदाहरणके लिअे, हमारे देशमें प्यार किया जाता है, अुसका आदर और पूजा की जाती है तथा हमारी समाज-व्यवस्थामें अुसे अेक निश्चित स्थान प्राप्त हुआ है।

लेकिन आज हमारे अुसी देशमें दुर्भाग्यसे विचित्र दशा दीख पड़ती है। यह दशा राज्य-पुनर्रचना कमीशनकी रिपोर्ट और भाषा-वार राज्य-रचनाके सम्बन्धमें अुसकी सिफारिशोंके कारण हुअी है।

यहांके लोग अपनेको विशिष्ट प्रान्तवाले समझने लगे हैं। कोअी अपनेको आन्ध्र समझता है, कोअी कन्नड़ समझता है, तो कोअी बंगीय समझता है। जिस देशके लोग अपनेको 'सोऽहम्' — मैं वह हूं जो अत्यन्त व्यापक तत्त्व है — कहते थे, अुसी देशके लोग आज अपनेको जाति, वर्ग या प्रान्तमें सीमित मानते हैं। मानवतासे भी जो लोग अपनेको अधिक व्यापक समझते थे, वे भारतीयसे भी अपनेको कम समझने लगे हैं। आज यह तमाशा दीख रहा है कि राज्य-पुनर्रचना कमीशनने कुछ सिफारिशें कीं, तो अेक प्रदेश खुश है और दूसरा नाखुश है। अेक बातमें अेकका आनन्द है और अुसी बातमें दूसरेका दुःख है। अगर अैसी योजना है तो वह सर्वोदयी योजना नहीं है।

कुल बंगाली राजी हैं (अेकाध अपवाद हो तो मैं नहीं जानता) कि मानभूमका हिस्सा पश्चिम बंगालको मिले। यानी कुल बंगालकी अेक राय है। अिसमें कांग्रेसी, कम्युनिस्ट, समाजवादी, हिन्दू-महासभावादी, जनसंघी सब डूब गये। अगर अुन लोगोंको कहीं नाराजी है तो अिस बातकी है कि हमने जितना मांगा था अुससे कम मिला। और कुल बिहार अिसलिअे दुःखी है कि मानभूमका हिस्सा बंगालमें जा रहा है। अत्यन्त दयनीय दशा अिस देशकी दीख पड़ती है। आखिर तो मानभूम भारतमें ही रहनेवाला है।

यह केवल अेक व्यावहारिक सवाल है, अिसमें सहूलियत देखनी है। परन्तु अिसमें संकुचित हृदय दीख पड़ता है।

मानभूमका नाम मैंने मिसालके लिअे लिया है। अैसे दूसरे नाम भी ले सकता हूं, जहां देशके निवासियोंके हृदय अितने ही संकुचित बन गये हैं। अुड़ीसामें कुछ लोगोंने राज्य-पुनर्रचना कमीशनकी रिपोर्टसे बहुत चिढ़कर अुसकी अेक प्रतिको जला डाला! रिपोर्टमें भला क्या गलत था? कमीशनने कुछ सिफारिशें की थीं और कुछ सुझाव रखे थे, जिन्हें स्वीकार या अस्वीकार करनेकी बात थी। यह काम सबके मिलकर सोचनेसे या पार्लमेन्ट और सरकार द्वारा ज्यादा अच्छी तरह किया जा सकता है। लेकिन अिसके बदले अुन्होंने गुस्सेमें रिपोर्टको जलाकर खाक कर डाला। आखिर अुड़ीसाको खोना क्या था? यही कि अुनकी साधिल्का और सरसुआको अुड़ीसामें मिला देनेकी मांग मंजूर नहीं की गअी। रिपोर्टमें यह बताया गया था कि ये दोनों प्रदेश पूर्ववत् बिहार

www.vinoba.in

राज्यमें ही रहेंगे। अगर रिपोर्टने अिससे अुलटी बात कही होती तो बिहारमें अिसी तरहका शोरगुल मचाया जाता!

अिस बेल्लारी जिलेके प्रश्नको ही लीजिये, जो रिपोर्टके मुताबिक आन्ध्र राज्यका ही हिस्सा रहेगा। आन्ध्रके लोग कमीशनके अिस निर्णयसे अितने ज्यादा खुश हुअे हैं, मानो सोनेका अेक ठोस बड़ा ढेर अुनकी गोदमें डाल दिया गया हो! दूसरी ओर कन्नड़ लोग अिसके कारण अत्यन्त दुःखी हैं। यह अुदाहरण भी बताता है कि अेक पक्षके हितोंका बलिदान होता है, जब कि दूसरेके हितोंकी रक्षा होती है।

अगर समाजकी रचना हितोंके संघर्षके आधार पर की जाय, तो वह रचना और संगठन दोषपूर्ण है। अिसलिअे हमें समाजकी अैसी पुनर्रचना करनी होगी और अुसमें फिरसे अैसी जीवनशक्ति डालनी होगी, जिससे अेकके हित सबके हितोंके अनुकूल बन जायं। आज ज्यादा बड़े प्रान्तों या राज्योंको अपने बीच हितोंके संघर्षका सामना करना पड़ रहा है। अिससे हम अिसी नतीजे पर पहुंचते हैं कि जिन प्रमुख और अग्रगण्य लोगोंको समाजकी पुनर्रचनाके लिअे कुशल और जिम्मेदार माना गया है, वे अैसे नये समाजकी योजना पेश करनेमें असफल रहे हैं, जिसमें किसीके हितोंका दूसरोंके हितोंके साथ कोअी विरोध या संघर्ष न हो।

अिस वक्त हम अिस बातको महसूस करें कि हम भारी खतरोंके बीच हैं। आज हमारे हृदय पहलेकी अूंचाअीसे गिर गये हैं, अुनकी अुदात्त भावनायें नष्ट हो गअी हैं और अुनके टुकड़े हो गये हैं। अेक बार फिर आन्ध्रका ही विचार कीजिये। आन्ध्र लोग विशालान्ध्रकी महत्त्वाकांक्षा रखते हैं और अुसके लिअे आग्रह करते हैं। लेकिन हम कहते हैं कि हमारा देश केवल अिसीलिअे महान नहीं बन जायगा कि अुसका अेक या दूसरा प्रान्त भूभागमें दूसरेसे बड़ा और विशाल बन जाता है। कोअी देश महान बननेका गौरव और यश तभी प्राप्त करता है जब अुसकी प्रजाके हृदय अुदार और विशाल बन जायं। हम यह जरूर चाहते हैं कि आन्ध्र अपनी जनताकी महत्ता और अुदारतासे विशाल बने।

अिस या अुस प्रान्तके कुछ लोग अिस बातका डर रखते हैं कि अगर अुनके प्रान्तका कोअी हिस्सा पड़ोसके राज्योंमें मिला दिया गया तो अुनका शोषण होगा या अुन्हें लूटा जायगा। लेकिन पिछड़े हुओंको आगे बढ़े हुअे लोगोंसे डरना नहीं चाहिये, न अज्ञान लोगोंको विद्वानोंके सामने शर्माना चाहिये। न तो कमजोरोंको ताकतवरों और बलवानोंसे डरना चाहिये और न निरक्षरोंको पढ़े-लिखोंसे डरना या घबराना चाहिये। अिसके खिलाफ, अुनके दिलोंमें अिन लोगोंके लिअे प्रेम और आदर होना चाहिये। दोनोंमें परस्पर प्रेम और आदरका भाव होना चाहिये। लेकिन आज तो अिससे बिलकुल अुलटा होता हम देखते हैं। क्यों? अिसका अेकमात्र कारण यह है कि जिन्हें भगवानने अधिक बुद्धि, काफी धन-दौलत, बड़ी बड़ी जमीनें, अधिक शारीरिक शक्ति वगैरा दी है, वे लोग ज्यादातर अिन सबका दुरुपयोग ही करते हैं। मनुष्यके मनका झुकाव दैवी और आसुरी दोनों प्रकारकी वृत्तियोंकी ओर होता है। अिसलिअे हमारी ताकत, शक्ति तथा दूसरे सब गुणोंकी प्रतिष्ठा या पतन हमारे द्वारा किये जानेवाले अिन गुणोंके सदुपयोग या दुरुपयोगमें निहित है।

अिसलिअे हमें भाषाके आधार पर राज्योंकी पुनर्रचनाके प्रश्नको, तथा दूसरे किसी भी प्रश्नको, और राज्य-पुनर्रचना कमीशनकी रिपोर्टमें की गअी सिफारिशोंको सच्ची दृष्टिसे और राष्ट्रके हितोंके व्यापक दृष्टिकोणसे देखना चाहिये। हमें अपने देशके अिस पहलू पर गहराअीसे तथा आत्म-निरीक्षणकी भावनासे विचार करना चाहिये। हमें आपसमें शान्त विचार-विनिमय करके अपने मतभेदोंकी बारीक छानबीन करनी चाहिये तथा अेक-दूसरेको समझा-बुझाकर और मेल-मिलापकी भावनासे अुन्हें दूर करना चाहिये। हमें तुच्छ मतभेदों और लड़ाअी-झगड़ोंके शिकार नहीं बनना चाहिये। गंभीर मतभेद और दृष्टिभेद जरूर प्रकट करना चाहिये। अुससे कोअी हानि नहीं होगी। हरअेकको अैसा करनेका अधिकार है। लेकिन अैसा केवल अेक-दूसरेके विचारों और दृष्टिकोणके आदान-प्रदान और अुनकी जांचके लिअे किया जाना चाहिये और वहीं तक अुसे सीमित रखना चाहिये; अिसके पीछे आपसी लड़ाअी-झगड़ेका, अेक-दूसरे पर दोषारोपण करनेका या ताना मारनेका हेतु नहीं होना चाहिये। अगर परस्पर प्रेम और सद्भावनाका अभाव हो तो हम अलग रह सकते हैं। लेकिन यह भी प्रेमके खातिर और स्नेहपूर्ण ढंगसे किया जाना चाहिये।

अितने बड़े और महत्त्वपूर्ण अुदाहरणोंके बारेमें हम स्पष्ट शब्दोंमें यह कहना चाहते हैं कि किसी तरह अुत्तेजित होने, भ्रममें पड़ने या आगापीछा करनेकी कोअी जरूरत नहीं है। भाअियो, भारतीयोंके नाते — अेक राष्ट्रके नाते — हमारी आन्तरिक शक्ति थोड़ी भी नहीं बढ़ेगी, अगर हम संकुचितता और अविवेकको अपने पर हावी होने देंगे।

हम यह कबूल करते हैं कि जब और जहां सरकारी कामकाज अैसी भाषामें चलता है जिसे प्रान्तके लोग समझते हैं, तब और वहां लोगोंको आसानी और सुविधा होती है। जब तक शासनका कामकाज अैसी भाषामें नहीं चलता जिसे किसान समझता है, तब तक अुसे स्वराज्यके आगमनका अनुभव नहीं हो सकता। अिसलिअे हम भाषाके आधार पर राज्योंकी पुनर्रचनाको आवश्यक मानते हैं और अुसकी अुपयोगिता तथा महत्त्वको समझते हैं। लेकिन साथ ही हम अिस बात पर भी जोर देना चाहते हैं कि अुसके पीछे दिखावा और अभिमान ही ज्यादा है। परंतु हम अिसके लिअे अितना मिथ्या अभिमान क्यों करते हैं? अिसका मुख्य कारण यह है कि राज्योंकी पुनर्रचना करनेमें हमारे देशने पश्चिमके नमूनेकी नकल की है।

लेकिन हमें यह समझना चाहिये कि राज्य-पुनर्रचनाकी कल्पना कार्यदक्षतासे चलाये जानेवाले राजकाज और प्रान्तोंके कामकी सुव्यवस्थाकी व्यावहारिक दृष्टिसे ही की गअी है और अिसी दृष्टिको सामने रखकर अुस पर अमल भी होना चाहिये। हमें सदाके लिअे यह समझना और महसूस करना चाहिये कि हम विश्वके नागरिक हैं, भले हम कितने भी बड़े या छोटे क्यों न हों।

हमारा जो ध्येय और आकांक्षा थी, अुसके खिलाफ कमीशनकी रिपोर्टके परिणामों और प्रतिक्रियाओंने अैसा रूप और मोड़ लिया है कि हम, जो अपनी स्वतंत्रताकी अनोखी लड़ाअीके जमानेमें भारतीयोंके नाते अेक हो गये थे, आज प्रान्तीय बन गये हैं, हमारे हृदय अत्यन्त संकुचित हो गये हैं।*

(अंग्रेजीसे)

* आंन्ध्रमें आंध्र-अुत्कलकी सीमा पर ता० १–१०–'५५ को, चिपुरुपल्लुमें ता० १६-१०-'५५ को, विशाखापट्टम्में ता० २७-१०-'५५ को और कट्टिपुड़ीमें ता० ७–११–'५५ को दिये गये श्री विनोबाके प्रार्थना-प्रवचनोंसे संग्रहीत।

विषय–सूची

		पृष्ठ
राज्य-संविधान और अीश्वर	मगनभाअी देसाअी	३३७
बोधगयाका समन्वय आश्रम	विनोबा	३३८
यंत्रोद्योगों और हाथ-अुद्योगोंके बीच होड़	मगनभाअी देसाअी	३४०
युनिवर्सिटी शिक्षणका स्तर	मगनभाअी देसाअी	३४१
आजके भारतमें भूदानका कार्य	सुरेश रामभाअी	३४२
राज्य-पुनर्रचना कमीशन और हमारी जनताकी आत्मा	विनोबा	३४३
टिप्पणी :		
तेलघानी और तेलमिल	म० प्र०	३३९

www.vinoba.in